चतुर बेटी

शशि पाठक

एक लकड़हारा था। वह बहुत गरीब था। सम्पत्ति के नाम पर उसके पास एक मरियल, लंगड़ा घोड़ा तथा बूढ़ा गधा था और एक थी कुल्हाड़ी। उसकी नौ वर्ष की एक बेटी भी थी जिसका नाम आइना कोज था। वह बहुत चतुर, विनम्र और बुद्धिमान थी। एक दिन लकड़हारे ने अपने लंगड़े, मरियल घोड़े पर लकड़ी का गट्ठर लादा और बाजार में बेचने चल दिया। बहुत देर तक उसके पास कोई ग्राहक नहीं आया तो वह निराश हो गया। वह लौटने ही वाला था कि तभी एक ठग की नजर उस पर पड़ी। ठग ने बूढ़े लकड़हारे से पूछा,–

"ऐ बूढ़े, लकड़ियां बेचोगे?"

लकड़हारा प्रसन्न होते हुए बोला,–हां, हां, बेचनी है।

"कितने में बेचोगे?"

"एक चांदी के रुपये में।"

"अच्छा, इसी कीमत पर, लकड़ियां जिस हालत में हैं, उसी हालत में बेचोगे।

"हां-हां बेच दूंगा।" लकड़हारे ने उसकी बात को समझे बिना कहा।

"तब ठीक है, ये लो एक चांदी का रुपया"–इतना कहकर वह ठग घोड़ा सहित लकड़ी लेकर चल दिया। ये देख गरीब लकड़हारा रोने चिल्लाने लगा। भीड़ इकट्ठी हो गई। ठग जोर-जोर से चिल्लाने लगा, "ओ बूढ़े, चिल्लाता क्यों है।" लकड़हारे द्वारा विरोध करने पर ठग उसे खींचता हुआ काजी के पास ले गया। सारी बातें सुनकर काजी ने भी लकड़हारे को डांटते हुए कहा कि तुम्हें अपने वायदे के अनुसार लकड़ी घोड़ा सहित ही देनी पड़ेगी।"

लकड़हारा असहाय सा घर वापस आ गया। अपने पिता को उदास देख, उसकी बेटी आइना कोज ने पूछा तो लकड़हारे ने बाजार में जो कुछ घटित हुआ था सब कुछ बता दिया।

दूसरे दिन पिता से आज्ञा लेकर, आइना कोज बूढ़े गधे पर लकड़ियों का गट्ठर लाद कर बाजार को चल दी। वह उसी ठग का इन्तजार करने लगी। थोड़ी देर बाद उसे वह ठग दिखाई दिया। पिता के बताए अनुसार उसकी लम्बी-लम्बी दाढ़ी थी। उसने एक लम्बा चोगा भी पहन रखा था आते ही वह लड़की से बोला

"ऐ लड़की, लकड़ियां बेचेगी?"

"हां चाचाजान बेचूंगी।"

"कितने में?"

"दो चांदी के सिक्कों में।"

"क्या इतने दाम में, लकड़ियां जिस हालत में हैं, उसी हालत में बेचोगी?"

"अवश्य। पर दाम भी उसी हालत में लुंगी जिस हालत में वो हैं।"

"हां, मंजूर है।"

लड़की ने खुशी-खुशी लकड़ियों सहित, गधा उसे दे दिया। ठग ने भी दो चांदी के सिक्के निकाले लड़की की ओर बढ़ा दिए, परन्तु आइना कोज बोली, "ऐसे नहीं चचाजान, सिक्के जिस हालत में हैं उसी हालत में देने का वायदा किया था तुमने। भूल गये क्या?"

"क्या मतलब?"

"मतलब ये कि मुझे तुम्हारा हाथ भी चाहिए।"

आइना कोज के इतना कहते ही ठग भौंचक्का सा रह गया। वह उसे गालियां देने लगा। शोर-शराबा सुनकर भीड़ एकत्रित हो गई। काजी को बुलाया गया। सारी बातें सुनकर काजी ने ठग से कहा, "यदि तुम अपना हाथ बचाना चाहते हो तो दो चांदी के सिक्के लकड़ियों के और पांच सिक्के हाथ-छुड़ाई के बदले में लड़की को दो।"

लड़की सारे सिक्के अपनी फ्रॉक में समेटे, अपने पिता की बेइज्ज़ती का बदला लेकर घर आ गई। □

एक सुबह ऐसी भी होगी
मेरा अपना सूरज होगा
मेरी अपनी धरती होगी
मेरे हाथों में हंसते होंगे
इस धरती के फूल सारे
आंखों में आस पलती होगी
एक सुबह ऐसी भी होगी।

सुनीता ठाकुर